स्मृति (श्रीराम शर्मा)

पाठ का सारांश

बड़े भाई द्वारा लेखक को चिट्ठियाँ डालने के लिए भेजना–लेखक जब ग्यारह वर्ष का था, तभी उसके साथ यह घटना घटी थी। तब कड़ाके की सरदी का समय था और शाम के साढ़े तीन या चार बजे के आस-पास लेखक अपने साथियों के साथ झरबेरी से बेर तोड़कर खा रहा था। तभी एक आदमी ने आवाज़ लगाते हुए कहा कि तुम्हारे भाई बुला रहे हैं। लेखक अपने बड़े भाई से बहुत डरता था, उस पर गलती यह कि शाम के चार बजे तक भी वह घर पर नहीं था। लेखक को इसी बात का डर था कि कहीं बड़े भाई उसकी पिटाई न कर दें, पर घर पहुँचते ही जब भाई साहब ने पत्रों को पकड़ाकर यह कहा कि इन्हें मक्खनपुर डाकखाने में डाल आओ, ताकि शाम की डाक से ही चिट्ठियाँ निकल जाएँ, ये बड़ी ज़रूरी हैं; तब लेखक की जान-में-जान आई।

रास्ते में पड़ने वाले कुएँ का वर्णन–लेखक और उसका छोटा भाई अपना-अपना डंडा, धोती में भुनाने के लिए थोड़े चने लेकर और चिट्ठियों को टोपी में रखकर चल पड़े। दोनों भाई तेज़ी से चलने लगे। उछलते-कूदते वे गाँव के उस कुएँ के पास पहुँच गए, जिसमें एक काला साँप गिर गया था। कुआँ कच्चा था और चौबीस हाथ गहरा था। उसमें पानी का नामोनिशान नहीं था।

कुएँ में साँप के होने का पता चलना–बच्चे चूँकि स्वभाव से ही नटखट होते हैं, इसलिए मक्खनपुर पढ़ने जाने वाली लेखक की पूरी टोली ने एक दिन उझककर कुएँ में झाँकने की सोची। सबसे पहले लेखक ने झाँककर देखा। उसने जिज्ञासावश कुएँ में एक ढेला फेंका कि उसकी प्रतिध्वनि सुनाई पड़ सके। ढेला गिरते ही उसमें से साँप की फुसकार सुनाई पड़ी। तब से प्रतिदिन साँप की क्रोधपूर्ण फुसकार सुनने के लिए ही बच्चे आते-जाते उसमें ढेला फेंका करते।

लेखक की शरारत और चिट्ठियों का कुएँ में गिरना–लेखक की इच्छा हुई कि वह आज भी कुएँ में एक ढेला डालता हुआ चले और उसने वैसा ही किया, पर जैसे ही उसने झाँककर और एक हाथ से अपनी टोपी उतारते हुए कुएँ में ढेला फेंका, वैसे ही उसकी टोपी के नीचे रखी तीनों चिट्ठियाँ चक्कर काटती हुई कुएँ में गिरती चली गईं और वह उन्हें विस्मित बेबस नज़रों से देखता रहा। उसको कुछ समझ न आया कि वह क्या करे? एक ओर भाई की डाँट और पिटाई थी तो दूसरी ओर ज़िम्मेदारी का बोझ। उसने चिट्ठियों को निकालने का निर्णय किया और जैसे-तैसे सभी धोतियों को रस्सी की तरह बाँधकर उनके सहारे कुएँ में उतर गया।

चिट्ठियाँ निकालने के लिए लेखक का संघर्ष–कुएँ के बीचोबीच लटके लेखक ने साँप को एक प्रतिद्वंद्वी की तरह देखा। फिर उसका ध्यान बँटाने के लिए कभी पैर से मिट्टी गिराई तो कभी डंडे को दूसरी ओर फटकारा। इसी दौरान लेखक के हाथ से डंडा छूट गया और उसकी चीख निकल पड़ी, जिससे छोटे भाई को लगा कि वह साँप द्वारा डँस लिया गया है, परंतु अंत में लेखक जैसे-तैसे साँप को चकमा देकर चिट्ठियाँ निकालने में सफल हो जाता है।

लेखक का कुएँ से निकलना–तत्पश्चात् लेखक अपने हाथों के सहारे 36 फुट ऊपर चढ़कर बाहर निकल आया। बाहर आकर यह निर्णय लिया गया कि कुएँ वाली घटना किसी को भी नहीं बताई जाएगी। लेखक ने यह बात वर्ष 1915 में मैट्रीकुलेशन पास करने के उपरांत ही अपनी माँ को बताई और माँ ने उसे प्यार से गोद में एक नन्हीं चिड़िया की भाँति छुपा लिया। इस तरह लेखक द्वारा डंडे से किया गया यह शिकार रोचक होने के साथ-साथ काफ़ी खतरनाक था, जो हमेशा के लिए उसके स्मृति-पटल पर अंकित हो गया था।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

प्रश्न 1 : "स्मृति पाठ बाल-मनोविज्ञान की परतों को खोलता है।" कैसे? सिद्ध कीजिए।

उत्तर : 'स्मृति' पाठ में लेखक ने बच्चों के स्वभाव और आदतों की ओर ध्यान आकर्षित किया है। बच्चे चंचल होते हैं; अतः बाल-सुलभ शरारतें करना उनका स्वभाव है। वे अनेक शरारतें करते हैं; जैसे– पेड़ों पर चढ़कर फल तोड़ना, वर्षा में भीगना, जीव-जंतुओं को तंग करना, जानवरों के खेल देखना आदि। कोई भी शरारत करते समय वे उसके परिणाम की चिंता नहीं करते। कभी-कभी शरारतें उनके लिए मुसीबत भी बन जाती हैं।

पाठ में लेखक बचपन में ऐसी ही शरारतें करता है। वह झरबेरी से बेर तोड़कर खाता है। स्कूल में आते-जाते रास्ते में एक कुएँ में रहने वाले साँप को ढेला मारकर छेड़ता है। इसके कारण वह मुसीबत में फँस जाता है। भाई की दी हुई चिट्ठियाँ साँप को छेड़ते समय कुएँ में गिर जाती हैं। वह अपने प्राणों को संकट में डालकर कुएँ में उतर जाता है। बच्चा होने के कारण वह परिणाम की भी चिंता नहीं करता। कुछ देर वह कुएँ पर बैठकर रोता भी है; क्योंकि यह भी बच्चों का स्वभाव ही है। इस प्रकार 'स्मृति' पाठ में लेखक ने बाल-मनोविज्ञान की परतों को खोला है।

प्रश्न 2 : भाई के बुलाने पर घर लौटते समय लेखक के मन में किस बात का डर था?

उत्तर : सरदी का मौसम था। शाम के तीन-चार बज चुके थे, लेकिन लेखक अपने साथियों के साथ झरबेरी से बेर तोड़कर खा रहा था। साथ में छोटा भाई भी था। उसी समय किसी आदमी ने कहा कि उसे उसका बड़ा भाई बुला रहा है। लेखक को इस बात का डर लग रहा था कि इतनी देर तक घर से बाहर रहने के अपराध में बड़े भाई उसकी पिटाई करेंगे।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न 3 : मक्खनपुर पढ़ने जाने वाली बच्चों की टोली रास्ते में पड़ने वाले कुएँ में ढेला क्यों फेंकती थी?

उत्तर : पढ़ने जाने वाले बच्चों की टोली में से सबसे पहले एक दिन लेखक ने ढेले की प्रतिध्वनि सुनने के लिए कुएँ में ढेला फेंका। ढेले के गिरते ही उसमें से साँप की फुसकार की आवाज़ सुनाई दी जिससे उन्हें पता चला कि कुएँ में साँप रहता है। बस उस दिन से प्रतिदिन, आते-जाते बच्चों की टोली साँप की फुसकार सुनने के लिए प्रतिदिन कुएँ में ढेला फेंकने लगी।

प्रश्न 4 : कुएँ में उतरकर चिट्ठियों को निकालने संबंधी साहसिक गतिविधि को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : लेखक अपनी तथा भाई की सभी धोतियों को जोड़कर उनसे रस्सी बनाई और उसे कुएँ में लटकाकर उसका एक सिरा कुएँ की डेंग से बाँधकर उसके सहारे नीचे कुएँ में उतर गया, जहाँ काला साँप फन उठाए उसका इंतज़ार कर रहा था। लेखक ने पहले अपने पैर से थोड़ी-सी मिट्टी गिराई, साँप उस पर टूट पड़ा। फिर उसने डंडे से चिट्ठियों को सरकाना चाहा तो साँप ने पलटकर डंडे पर फन से वार किया। डंडा साँप के विष में सन गया। लेखक ने फिर एक मुट्ठी मिट्टी साँप के दूसरी ओर फेंकी, साँप पलटकर उस पर झपटा। इतनी देर में लेखक ने चिट्ठियाँ उठा लीं और धोती के सहारे ऊपर आ गया।

प्रश्न 5 : 'साँप ने फुसकार मारी या नहीं', ढेला उसे लगा या नहीं, यह बात अब तक स्मरण नहीं'–यह कथन लेखक की किस मनोदशा को स्पष्ट करता है?

उत्तर : यह कथन लेखक की बदहवासी और भय की मनोदशा को बताता है। कुएँ में ढेला फेंकने के चक्कर में बड़े भाई की दी हुई तीनों चिट्ठियाँ टोपी में से निकलकर कुएँ में गिर गईं। वे चिट्ठियाँ उसके लिए बहुत महत्त्वपूर्ण थीं। उन्हें गिरती हुई देखकर लेखक के होश उड़ गए। फिर उसे न साँप की फुसकार सुनने की सुध रही और न ही ढेले के कुएँ में गिरने या न गिरने की। वह बड़े भाई की पिटाई के भय से अपनी सुध-बुध खो बैठा।

प्रश्न 6 : किन कारणों से लेखक ने चिट्ठियों को कुएँ से निकालने का निर्णय लिया?

उत्तर : लेखक ने दो कारणों से कुएँ से चिट्ठियाँ निकालने का निर्णय लिया। पहला कारण तो यह था कि वह चिट्ठियों के कुएँ में गिरने की बात सच में बताकर बड़े भाई की भयंकर मार का शिकार नहीं होना चाहता था। दूसरा कारण यह था कि झूठ बोलकर चिट्ठियों के न पहुँचने की ज़िम्मेदारी के बोझ से नहीं दबना चाहता था।

प्रश्न 7 : साँप का ध्यान बँटाने के लिए लेखक ने क्या-क्या युक्तियाँ अपनाईं?

उत्तर : लेखक ने साँप का ध्यान बँटाने के लिए पहले अपने पैर से कुछ मिट्टी गिराई। साँप उसकी ओर लपका। फिर लेखक ने डंडे से चिट्ठियों को सरकाना चाहा तो साँप ने डंडे पर फन मारा। लेखक ने फिर एक मुट्ठी मिट्टी साँप के दाईं ओर फेंकी, साँप उस ओर झपटा। तभी लेखक ने चिट्ठियाँ उठा लीं और जैसे-तैसे कुएँ से बाहर आ गया।

प्रश्न 8 : "मनुष्य का अनुमान और भावी योजनाएँ कभी-कभी कितनी मिथ्या और उलटी निकलती हैं"–का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : इस पंक्ति का आशय यह है कि मनुष्य जो अनुमान लगाता है या जो योजनाएँ बनाता है, वे कभी-कभी बिलकुल विपरीत सिद्ध होती हैं। इसका कारण यह है कि परिस्थितियाँ सदैव बदलती रहती हैं। हमारी योजनाओं की सफलता और असफलता परिस्थितियों पर ही निर्भर करती है। उदाहरण के लिए: लेखक ने सोचा था कि वह कुएँ में उतरकर साँप को डंडे से मारकर की परिस्थितियाँ देखीं तो उसकी सारी योजनाएँ धरी-की-धरी रह गईं; कुएँ में डंडा चलाने के लिए पर्याप्त स्थान नहीं था। इसलिए वहाँ साँप को मारना संभव नहीं था।

प्रश्न 9 : लेखक ने कुएँ में उतरने से पहले जो योजनाएँ बनाई थीं, वे कुएँ में उतरने के बाद 'आकाश-कुसुम' क्यों सिद्ध हुईं?

उत्तर : लेखक ने कुएँ में उतरने से पहले योजना बनाई थी कि कुएँ में उतरकर और डंडे से साँप को मारकर वह चिट्ठियाँ निकाल लाएगा। लेकिन जब वह नीचे पहुँचा तो वह योजना 'आकाश कुसुम' अर्थात् कोरी कल्पना सिद्ध हुई; क्योंकि वहाँ स्थिति दूसरी थी। साँप अपना फन उठाए उसकी प्रतीक्षा में बैठा था। साँप को डंडे से मारने की जगह वहाँ नहीं थी। लेखक को साँप के पास से चिट्ठियाँ हासिल करने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ा और अपनी जान भी जोखिम में डालनी पड़ी। इस प्रकार उसकी योजना 'आकाश कुसुम' सिद्ध हुई।

प्रश्न 10 : "सच बोलकर पिटने के भावी भय और झूठ बोलकर चिट्ठियों के न पहुँचने की ज़िम्मेदारी के बोझ से दबा मैं बैठा सिसक रहा था"– 'स्मृति' पाठ के आधार पर सच और उत्तरदायित्व निभाने के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : मानव व्यवहार के दो महत्त्वपूर्ण गुण हैं– सत्य और उत्तरदायित्व का पालन करना। इनके कारण व्यक्ति महानता के शिखर पर पहुँच सकता है। बचपन में लेखक बहुत मस्त और लापरवाह था। उसके कार्यों और व्यवहार को देखकर कोई नहीं कह सकता था कि वह इतना ज़िम्मेदार और सच्चा भी हो सकता है, लेकिन वास्तव में सत्य और उत्तरदायित्व का पालन करना उसकी नस-नस में भरा था। यदि वह झूठा और लापरवाह होता तो भाई से जाकर कह सकता था कि चिट्ठियाँ डाकखाने में डाल दी हैं, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। उत्तरदायित्व के इसी बोझ के कारण वह सिसकने लगा और फिर इसी उत्तरदायित्व को निभाने के लिए वह अपनी जान जोखिम में डालकर कुएँ में उतरा, साँप से लड़ा और चिट्ठियों को निकालकर ले आया। इतना साहसपूर्ण कार्य उसने उपर्युक्त दोनों गुणों के कारण ही किया। इन गुणों के कारण वह जीवन में सफल भी हुआ। अतः सत्य और उत्तरदायित्व का पालन करना मानव की सफलता के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हैं।

प्रश्न 11 : लेखक ने बाल्यकाल में कौन-सी शरारत की, जो उसके लिए मुसीबत का कारण बन गई थी?

उत्तर : बचपन में जिस रास्ते से लेखक स्कूल जाता था, उस पर एक कच्चा कुआँ था। कुएँ में एक साँप था। लेखक तथा उसके साथी आते-जाते कुएँ में ढेला फेंकते थे और साँप की फुसकार सुनते थे। एक दिन लेखक के बड़े भाई ने उसे कुछ चिट्ठियाँ डाकखाने में डालने के लिए दीं। डाकखाने का रास्ता वही था, जिस पर साँप वाला कुआँ था। लेखक ने जाते समय फिर वही प्रतिदिन वाली शरारत की। वह जैसे ही कुएँ में ढेला फेंकने लगा, वैसे ही उसकी टोपी में रखी चिट्ठियाँ कुएँ में गिर गईं। उनको कुएँ से निकालने के लिए लेखक को कुएँ में उतरना पड़ा, जो उसके लिए बहुत बड़ी मुसीबत थी; क्योंकि उसे भयंकर साँप से लड़ना पड़ा।

प्रश्न 12 : लेखक ने क्या निश्चय किया? उसे पूरा करने के लिए उसने क्या युक्ति अपनाई?

उत्तर : चिट्ठियाँ कुएँ में गिर जाने से पहले तो लेखक और उसका छोटा भाई खूब रोए, लेकिन फिर उसने कुएँ में उतरकर चिट्ठियाँ निकालने का निश्चय किया। इसके लिए उसने अपनी धोतियों के सहारे नीचे कुएँ में उतरने का विचार किया। उनके पास एक धोती में चने बँधे थे, दो धोतियाँ उन्होंने अपने कानों पर बाँध रखी थीं और दो धोतियाँ दोनों भाई पहने हुए थे। उन्होंने पाँचों धोतियाँ

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

दूसरे सिरे को चरस के डेंग पर कसकर बाँध दिया और चारों ओर चक्कर लगाकर एक और गाँठ लगाई। इसके बाद वह सिरा छोटे भाई को पकड़ा दिया। इसके बाद वह धोती के सहारे कुएँ में उतर गया।

प्रश्न 13 : "अपनी शक्ति के अनुसार योजना बनाने वाला ही सफल होता है।" 'स्मृति' पाठ के आधार पर इस कथन की विवेचना कीजिए।

उत्तर : जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए साहस, शक्ति और दृढ़-संकल्प का होना आवश्यक है। लेकिन जो व्यक्ति इन गुणों का प्रयोग योजनाबद्ध तरीके से करता है, वही सफल होता है। साहसी और संघर्षशील व्यक्ति जिस काम को करने की ठान लेता है, उसे पूरा करके ही दम लेता है।

पाठ में लेखक द्वारा कुएँ से चिट्ठियाँ निकालना बहुत ही साहसिक कार्य था; क्योंकि वहाँ साँप के रूप में साक्षात् मौत बैठी थी। लेखक ने इस कार्य के लिए पहले दृढ़-संकल्प किया और फिर योजना बनाई। उसने पाँच धोतियों को परस्पर कसकर बाँधा। धोती को कुएँ की डेंग से बाँधकर उसके सहारे नीचे उतरा। अपने डंडे के सहारे चिट्ठियों को उस भयानक साँप के पास से खींच लिया। उसने निडरतापूर्वक अपनी शक्ति और साहस से साँप का मुकाबला किया और उसे परास्त करके चिट्ठियाँ लेकर कुएँ से बाहर आ गया। यदि वह योजनापूर्वक अपनी शक्ति का प्रयोग न करता तो कुएँ पर बैठा रोता रहता और कुछ न कर पाता। अतः पाठ की घटना से सिद्ध होता है कि शक्ति के अनुसार योजना बनाने वाला ही सफल होता है।

प्रश्न 14 : कुएँ के अंदर साँप और लेखक का जो संघर्ष हुआ, उससे जीव-जंतुओं के किस स्वभाव का पता चलता है?

उत्तर : लेखक जब चिट्ठियाँ निकालने कुएँ में उतरा, तब उसका सामना अत्यंत खतरनाक ज़हरीले साँप से हुआ। साँप के पास पड़ी चिट्ठियों को पाने के प्रयास में जब लेखक ने डंडे को साँप के दाएँ पड़ी चिट्ठी की ओर बढ़ाया तो साँप का फन पीछे की ओर हुआ। लेखक बताता है कि उस समय ऐसा लगा जैसे फुसकार के साथ कोई काली बिजली कड़ककर डंडे पर गिरी हो।

लेखक इस घटना से भीतर तक काँप गया। उसके हाथों से डंडा छूट गया और अचानक उछलने के बाद जब वह पुनः स्थिर हुआ, तब उसने देखा कि डंडे के सिरे पर तीन-चार जगहों पर पीव जैसी विष की बूँदें लगी हुई थीं। लेखक ने इसी वजह से ऐसा कहा है कि डंडे पर विष उगलकर साँप ने मानो अपनी शक्ति का सर्टिफिकेट दे दिया था। इससे यह भी पता चलता है कि जीव-जंतु भी अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए अपनी ओर से अंत समय तक भरपूर प्रयास करते हैं। वे हार मानने या समर्पण करने के लिए तुरंत तैयार नहीं होते। अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए संघर्षरत मनुष्यों को लेखक और साँप दोनों से प्रेरणा लेनी चाहिए।

प्रश्न 15 : 'फल तो किसी दूसरी शक्ति पर निर्भर है'–पाठ के संदर्भ में इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : इस पंक्ति का आशय यह है कि कर्म का फल ईश्वर के अधीन है, वह मनुष्य के हाथ में नहीं है। जब मनुष्य फल के विषय में सोचता है तो उसकी संकल्प-शक्ति क्षीण हो जाती है। वह सफलता और असफलता की दुविधा में फँस जाता है। कर्म-फल की चिंता न करके दृढ़-संकल्प के साथ कर्म करना चाहिए। लेखक ने जब एक बार कुएँ में उतरकर चिट्ठियाँ निकालने का संकल्प कर लिया तो उसकी सारी दुविधा मिट गई। उसने परिणाम की चिंता छोड़ दी। वह कुएँ में उतर गया और अपने कार्य में सफल भी हो गया।

प्रश्न 16 : 'स्मृति' पाठ को पढ़ने के बाद किन-किन बाल-सुलभ शरारतों के विषय में पता चलता है?

उत्तर : बच्चे में नटखटपन होता है; इसलिए शरारत करना उसका स्वभाव होता है। शरारतें जब तक बाल-सुलभ होती हैं, तब तक वे सुंदर और आनंददायी लगती हैं, लेकिन जब वे उद्दंडता बन जाती हैं तो असभ्यता कहलाती हैं। उस समय शरारतें बच्चे के लिए हानिकारक और दूसरों के लिए दुःखदायी हो जाती हैं। 'स्मृति' पाठ को पढ़ने से निम्नलिखित बाल-सुलभ शरारतों का पता चलता है–

(i) बच्चे सारा दिन घर से बाहर धमाचौकड़ी मचाते हैं।
(ii) वे दिन ढलने तक घर से बाहर रहकर बाग-बगीचों में कच्चे फल तोड़कर खाते हैं या झरबेरी से बेर तोड़कर खाने जैसे काम करते हैं।
(iii) रास्ते में आते-जाते तालाब या कुएँ में ढेले फेंकते हैं।
(iv) जीव-जंतुओं को तंग करने में बच्चों को आनंद आता है।
(v) बच्चे टोली में रहना अधिक पसंद करते हैं।

प्रश्न 17 : पाठ में आई किस बात से पता चलता है कि लेखक के छोटे भाई को उससे अत्यधिक स्नेह था?

उत्तर : जब लेखक चिट्ठियाँ निकालने के लिए कुएँ में उतरा तो वहाँ भयंकर काला साँप फन उठाए बैठा था। लेखक ने जैसे ही डंडा चिट्ठियों की ओर बढ़ाया तो साँप ने उस पर अपना फन पटका, जिससे लेखक उछल पड़ा। साँप के फुसकारने तथा लेखक के उछलने के कारण उसके छोटे भाई ने समझा कि साँप ने लेखक को काट लिया है। अपने भाई के विरह के ख्याल से उसके कोमल हृदय को धक्का लगा, भ्रातृ-स्नेह के ताने-बाने को चोट लगी और छोटे भाई की चीख निकल गई।

यह घटना स्पष्ट रूप से यह दर्शाती है कि छोटे भाई को अपने बड़े भाई अर्थात् लेखक से अत्यधिक प्रेम और लगाव था। लेखक के प्रति प्रेम या लगाव की प्रबल भावना के कारण ही छोटे भाई की चीख निकल गई। यह दोनों भाइयों के बीच मौजूद गहरे आत्मीय संबंध को दर्शाता है। छोटा भाई अपने बड़े भाई की कुशलता के लिए अत्यंत व्याकुल एवं चिंतित था। यह भ्रातृ-प्रेम का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

प्रश्न 18 : 'स्मृति' पाठ के आधार पर बताइए कि जीवन में साहस का क्या महत्त्व है?

उत्तर : व्यक्ति के जीवन में साहस का अत्यधिक महत्त्व है; क्योंकि बिना साहस हम जीवन में कुछ भी नहीं कर सकते। साहस ही वह वैयक्तिक गुण है, जो किसी भी प्रकार की सफलता-प्राप्ति के लिए अपरिहार्य है। साहस के कारण ही हम किसी कार्य में नए सिरे से संलग्न होते हैं और आने वाली सभी परेशानियों का सामना करने को तैयार रहते हैं।

'स्मृति' पाठ का लेखक बचपन से ही बहुत साहसी था। वह ज़हरीले साँप से बिना भयभीत हुए सीमित साधनों के दम पर ही चिट्ठियाँ निकालने के लिए कुएँ में उतर गया और अंततः इसमें उसे सफलता प्राप्त हुई।

इस पाठ से यह प्रेरणा मिलती है कि हमें स्वयं को अत्यधिक साहसी बनाना चाहिए। साहसी बनकर ही जीवन में सफलता प्राप्त की जा सकती है। जो लोग भयभीत रहते हैं, वे कायर होते हैं, वे अपने जीवन में कोई भी जोखिम नहीं ले पाते और बिना जोखिम लिए कोई उल्लेखनीय सफलता भी प्राप्त नहीं कर पाते, इसलिए सभी व्यक्तियों को 'स्मृति' पाठ के लेखक की तरह साहसी होना चाहिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in